Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

बाँसुरी वादक स्व. पंडित पन्नालाल घोष का भारतीय संगीत में योगदान

Dr. Vikas Bharadwaj

Ph.d., A-4/702, Mahalaxmi Enclave, Near Singhania School, Baran Road, Kota, Rajasthan

शोध सार

प्राचीन काल से ही, भारतीय संगीत में अनेक कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उनमें एक प्रमुख नाम है–पंडित पन्नालाल घोष। आपने बांसुरी के साथ–साथ संगीत के कई क्षेत्रों में अपनी मेहनत, लगन एवं प्रयोगों द्वारा समृद्धता प्रदान की। प्रस्तुत शोध पत्र में,पंडित पन्नालाल घोष जी द्वारा भारतीय संगीत में किए गए विशेष योगदान एवं खोज को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। पंडित पन्नालाल घोष जी ने, न सिर्फ बांसुरी अपितु संपूर्ण संगीत जगत को अपने प्रयास एवं योगदानों द्वारा लाभान्वित किया। आपके द्वारा राग साहित्य, वाद्य यंत्र एवं संपूर्ण शास्त्रीय, उपशास्त्रीय एवं फिल्मी संगीत इत्यादि में विशेष योगदान दिए गए, जिनके कारण संपूर्ण संगीत जगत एवं संगीतज्ञ लाभान्वित हुए। प्रस्तुत शोधपत्र में, पंडित पन्नालाल घोष जी के पारिवारिक सदस्य एवं अन्य संपर्क सूत्रों द्वारा पूर्णतया प्रमाणिक जानकारी प्राप्त कर पंडित पन्नालाल घोष के सांगीतिक योगदान को प्रस्तुत किया है।

बीज शब्दः पंडित पन्नालाल घोष, बांसुरी।

भूमिका

भारतीय संगीत वैदिककाल से ही समृद्ध रहा है। प्रारम्भ में संगीत का अभ्युदय एवं विकास ईश्वर के कर कमलों द्वारा हुआ तत्पश्चात् मनुष्य अपनी सुन्दर कल्पनाओं के साथ इस दिशा में प्रवृत्त हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप संगीत का विकास एवं संरक्षण श्रेष्ठ रूप में हो सका। भारतीय संगीत आज अपने उत्कृष्ट एवं उच्चतम रूप में विद्यमान है, जिसमें हमारे पूर्वज एवं गुरूजनों का विशेष योगदान है। आप सभी के निरन्तर प्रयास द्वारा संगीत में कई शैलियाँ, राग, ताल, साहित्य, शास्त्र, सिद्धान्त एवं घरानों का अभ्युदय हुआ। वर्तमान में विद्यमान संगीत का विस्तृत शास्त्र आप सभी के योगदानों का ही परिणाम है।

इन सभी में एक प्रमुख नाम है 'पंडित पन्नालाल घोष'। आपके लिए कहा जाता है कि भगवान् श्रीकृष्ण के बाद आप ही वह कलाकार हैं, जिन्होंने 'बाँसुरी' जैसे अत्यन्त सरल एवं ग्राम वाद्य को श्रेष्ठ एवं विकसित रूप प्रदान कर एक पूर्ण वाद्य के रूप में स्थापित किया। वर्तमान में उपस्थित बाँसुरी का यह उत्कृष्ट रूप सिर्फ आपके ही प्रयास एवं योगदानों का परिणाम है। आप इतने दूरदर्शी थे कि आपने बाँसुरी में निहित असीमित क्षमताओं का पहले ही अनुमान लगा लिया तथा अपने गहन चिन्तन एवं अथक् प्रयास द्वारा इन सभी कल्पनाओं को साकार रूप प्रदान किया। आपने न सिर्फ बाँसुरी अपितु सम्पूर्ण संगीत जगत को एक नया रूप प्रदान किया एवं अपने विशेष योगदान द्वारा नये–नये आयाम स्थापित किये।

'पंडित पन्नालाल घोष' जी का जन्म 31 जुलाई, 1911 को बरीसाल ग्राम, बांग्लादेश में हुआ। पंडित पन्नालाल घोष जी बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। पन्नाबाबू जी के बाल्यकाल से यह अवगत होता हैं कि मात्र 7 वर्ष की आयु में ही उनका संगीत से जुड़ाव हो गया था। इस उम्र में जब बच्चे अलग–अलग प्रकार के खेलों में व्यस्त रहते हैं, तब पन्नाबाबू बाँसुरी पर बरीसाल ग्राम का लोक संगीत बजाया करते थे। इसी दौरान

पन्नाबाबू जी के मस्तिष्क में उत्पन्न एक विचार ने उनके जीवन को एक नई राह प्रदान की तथा बाँसुरी का भाग्य लिखना प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार पन्नाबाबू जी अपने पथ पर प्रशस्त हुए और ग्राम लोक संगीत के इस वाद्य को शास्त्रीय संगीत के अनुरूप सक्षमता प्रदान करने में प्रयासरत हुए। आपने अपने विचारों को साकार रूप प्रदान करने के लिए बाँसुरी की बनावट एवं तकनीक का गहन अध्ययन किया तथा बाँसुरीवादन की श्रेष्ठ शैली को विकसित किया।

पंडित पन्नालाल घोष जी का पालन–पोषण संगीतमय वातावरण में हुआ। अतः पन्नालाल जी की प्रारम्भिक तालीम अपने परिवार से ही आरम्भ हुई। दादाजी श्री हर कुमार घोष (ध्रुपद गायक और पखावज वादक), पिता श्री अक्षय कुमार घोष (सितारवादक), माता सुकुमारी जी (गायिका) एवं मामा श्री भावरंजन मजूमदार (संगीतकार) का आप की संगीत की प्रारंभिक शिक्षा में विशेष योगदान रहा। आपने प्रथम गुरू उस्ताद खुशी मोहम्मद खान साहब (हारमोनियम वादक एवं शास्त्रीय संगीतज्ञ), बंगाल के प्रतिष्ठित गुरू आचार्य श्री गिरिजाशंकर चक्रवर्ती जी एवं 'राग–संगीत' के सागर उस्ताद अलाउद्दीन खान साहब से भी गहन तालीम, विशेष रूप से आलाप करने का तरीका सीखा।

पंडित पन्नालाल घोष जी ने बाँसुरी के क्षेत्र में कई नये प्रयोग किये तथा अपने योगदानों द्वारा इस अत्यधिक सरल ग्राम वाद्य को एक पूर्ण एवं सक्षम वाद्य के रूप में स्थापित किया, साथ ही इसेसंगीत कार्यक्रम के मंच पर भी मान्यता दिलाई। यह आपका ही प्रयास था कि बीन, सितार, सरोद एवं सारंगी जैसे पारम्परिक वाद्यों की तरह बाँसुरी भी विकसित रूप में स्थापित हो सकी तथा इस वाद्य पर सभी संगीतमय कल्पनाएं साकार होने लगी। बाँसुरी के निर्माण में कौनसा पदार्थ सर्वश्रेष्ठ रहेगा, इसके लिये भी पन्नाबाबू जी ने अनेक प्रयोग किये। पन्नालाल जी ने धातु और अन्य कई प्रकार की लकड़ियों के साथ प्रयोग किये, परन्तु अंत में यह निश्चय किया कि बाँस अभी भी सर्वश्रेष्ठ साधन है, जिसके प्रयोग से बाँसुरी से श्रेष्ठ एवं उत्तम ध्वनि उत्पन्न होती है।

पंडित पन्नालाल घोष जी ने बाँस से निर्मित बड़ी बाँसुरी क्रमशः 32 इंच एवं 42 इंच (मंद्र बाँसुरी) का निर्माण किया। पंडित पन्नालाल घोष अधिकांशतः 32 इंच की बाँसुरी का प्रयोग करते थे, जो कि 'काली 2' के 'सा' के अनुरूप थी। सामान्य बाँसुरी पर मंद्र सप्तक के अति मंद्र स्वरों को उत्पन्न करना सम्भव नहीं था अतः आपने चार छिद्रों वाली ''मंद्र बाँसुरी'' का निर्माण किया जिससे मंद्र पंचम से अति मंद्र षड्ज तक स्वर विस्तार संभव हो सका। इस बाँसुरी की लम्बाई 42 इंच थी। इस प्रकार बाँसुरी पर दरबारी कान्हड़ा, मियां की मल्हार, मलुहा केदार, पूरिया धनाश्री, पूरिया जैसी गंभीर रागों में मंद्र सप्तक में भी विस्तार सम्भव हो सका, जो कि इन रागों में अत्यन्त आवश्यक था।

पन्नाबाबू जी ने अपने अथक प्रयास व रियाज़ द्वारा बाँसुरी पर मुखरित संगीत में महारथ हासिल की। इस समय उन्हें मध्यम स्वर से निशाद तक की मींड़ और धैवत स्वर श्रुतियों की बिहाग, यमन, बागेश्री आदि रागों में आवश्यकता महसूस हुई अतः उन्होंने मंद्र सप्तक के तीव्र मध्यम स्वर के लिए सातवें छिद्र का आविष्कार किया। पन्नाबाबू जी के शिष्य श्री प्रभाकर नाचणे ने इस छिद्र को ''ध्रुव मध्यम'' नाम दिया, जो कि आपकी वादन शैली का अभिन्न अंग है। इस सातवें छिद्र से खरज में स्वरों के विस्तार में भी व्यापकता मिली तथा दरबारी, यमन, केदार, तोड़ी, पूरिया, पूरिया धनाश्री, श्री आदि कई रागों को सही रूप में प्रस्तुत किया जाना संभव हो सका।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

तीव्र मध्यम और पंचम के मध्य, साथ ही खरज के तीव्र मध्यम से मध्य सप्तक के मध्यम तक एवं मध्य सप्तक के मध्यम से तार सप्तक के मध्यम तक के सभी स्वरों तक मींड़ लेना भी संभव हुआ। इसके साथ–साथ जिन रागों में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सरलता एवं सुन्दरता के साथ बाँसुरी पर प्रस्तुत किया जाना संभव हुआ। पन्नाबाबू जी ने ऐसी तकनीकियों को खोजा जिससे गंभीर, कठिन एवं व्यापक रागों को शास्त्र ध्यान में रखते हुए सरलता एवं सुन्दरता से प्रस्तुत करना संभव हो सका।

आपने जोड़, झाला, गतकारी (वाद्य रचना) और तंत्रकारी अंग के बाँसुरी पर प्रस्तुतिकरण के लिए वाद्य यंत्र की तकनीकियों पर अधिकार कर उन्हें बाँसुरी में प्रयुक्त किया। यह पन्नाबाबू जी का ही प्रयास था कि बाँसुरी पर 'राग संगीत' संभव हो सका। शास्त्रीय संगीत के साथ–साथ उपशास्त्रीय एवं सुगम संगीत की सभी कल्पनाओं का रूपान्तरण भी बाँसुरी पर संभव हुआ। वर्तमान में, राग संगीत के साथ–साथ ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी, भटियाली, बाउल, कीर्तन, मांड तथा फिल्मी संगीत आदि सभी में बाँसुरी प्रयुक्त होती है।

पन्नाबाबू जी ने गूढ़ तालीम, रियाज़, अनुभव एवं चिन्तन के आधार पर अपनी वादनशैली में सभी महत्वपूर्ण तत्व एवं गुणों का समावेश कर उसे श्रेष्ठतम रूप प्रदान किया। पन्नाबाबू जी की वादन शैली मूल एवं दुर्लभ शैली है, जिसके सभी बाँसुरीवादक अनुयायी बने। पंडित पन्नालाल घोष जी के वादन में गायकी और तंत्रकारी अंग दोनों का कुशल समावेश था, जिससे आपका बाँसुरीवादन पूर्ण, अनूठा एवं विरल था। आपके वादन में ध्रुपद एवं बीन अंग बड़ी कुशलता के साथ समाहित था। आप बाँसुरी पर ध्रुपद एवं बीन अंग के आलाप किया करते थे। आप एक–एक स्वर को बड़े धैर्य के साथ प्रयोग करते थे तथा आपके आलाप में 'ठहराव' पूर्ण रूप से परिलक्षित होता था। पन्नाबाबू जी, 'सा' लगाने का तरीका अर्थात् 'षड्ज की स्थापना' में अनूठे थे।

उस्ताद अलाउद्दीन खान साहब से मैहर घराने की विशेष तालीम (तंत्रकारी अंग) प्राप्त करने के साथ–साथ पन्नाबाबू जी ने गायकी अंग को भी बखूबी निभाया, जिसे आपने पहले ही अपने वादन में समाहित कर लिया था। आपकी प्रस्तुतियों में ख्याल गायकी के सभी गुणों का सहज परिलक्षण होता है। पन्नाबाबू जी गायन के सभी तत्व मींड़, गमक, मुरकी, खटका, सूत आदि जो आवाज़ द्वारा संभव थे, उन्हें बाँसुरी पर उत्पन्न कर सकते थे।

पन्नाबाबूजी अपने राग प्रस्तुतिकरण में 'आलाप–जोड़–झाला' का कुशलता से प्रयोग करते थे। आपका राग दरबारी, श्री, यमन, बिहाग, शंकरा, तोड़ी, पूरिया, मियां मल्हार जैसी रागों पर अद्भुत नियंत्रण था, साथ ही इन रागों का कुशल प्रस्तुतिकरण आपके कार्यक्रम को उच्च श्रेणी प्रदान करता था। आपने अपने वादन में साँतवें छिद्र का भी विशेष प्रयोग किया। कुशल नियंत्रण, रागदारी तथा भाव–रस के साथ–साथ आध्यात्मिक भाव आदि विशेषताओं के कारण पन्नाबाबू जी का कोई समतुल्य भी नहीं था।

पन्नाबाबू जी झूमरा, तिलवाड़ा एवं एकताल जैसी कठिन तालों में विलम्बित लय की रचनाएं प्रस्तुत करते थे तथा मध्य एवं द्रुत लय की रचनाएं अधिकांशतः सभी तालों में प्रस्तुत किया करते थे। पन्नाबाबू जी ने मध्य लय की रचनाओं के साथ–साथ तराना शैली को भी क्षेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें तंत्रकारी अंग के सभी तत्व, झाले की तकनीक आदि निहित थे, जो कि सामान्यतः सितार और सरोद जैसे वाद्य यंत्रों पर ही सम्भव है, इस प्रकार आपने ध्रुपद अंग को भी बखूबी निभाया।

पन्नाबाबू जी ने झाले का भी सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतिकरण किया। आप झाले में 'जीभ' का कुशल प्रयोग करते थे, साथ ही अति द्रुत लय में भी 'झाला' प्रस्तुत करते थे। आप सितार की गतें भी बाँसुरी पर प्रस्तुत करते थे तथा आपके वादन में गतकारी अंग स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता था।

पन्नाबाबू जी के वादन में ठहराव, स्वर लगाने का विशेष तरीका, विभिन्न तालों में अलग–अलग प्रकार की रचनाएं, तानों का विशेष प्रयोग, गमक, मुरकियाँ, कृन्तन, खटके आदि का विशेष प्रयोग इत्यादि सभी गुण निहित थे। इस प्रकार आपके वादन में 'गायकी एवं तंत्रकारी' अंग का उत्कृष्ट समावेश था।

पंडित पन्नालाल घोष जी की वादनशैली में 'राग शुद्धता' एक अभिन्न विशेषता है। आपने राग शास्त्र को सदैव निभाया, साथ ही राग के भाव को भी उत्कृष्टता से प्रस्तुत किया। आपने पुरानी बंदिशों को उनके भाव व रस के अनुरूप ही प्रस्तुत किया।

बाँसुरी पर पूरे तीन सप्तक का कुशल प्रयोग भी पंडित पन्नालाल घोष जी के वादन की मुख्य विशेषता थी। आप तीनों सप्तक में स्वर–विस्तार एवं राग प्रस्तुतिकरण करते थे। आप अपनी नियमित रूप से प्रयोग में ली जाने वाली बांसुरी पर अति तार सप्तक के षड्ज तथा बांसुरी को थोड़ा घुमा कर मंद्र सप्तक के मध्यम को उत्पन्न करते थे, तत्पश्चात आपने इसे विस्तृत रूप प्रदान किया तथा आप इसी बांसुरी पर मंद्र सप्तक के शुद्ध गांधार से अति तार सप्तक के शुद्ध मध्यम तक स्वर विस्तार करने लगे, इस प्रकार आपने बाँसुरी पर पूरे तीन सप्तक का प्रयोग किया।

पंडित पन्नालाल घोष जी ने बाँसुरी पर मींड़ का विशेष प्रयोग किया, जिससे राग एवं स्वर में निहित भाव पूर्ण रूप से प्रकट हो सका तथा गायकी अंग स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ।आप सामान्य एवं सरल मींड़ के साथ–साथ लम्बी एवं कठिन मींड़ का भी प्रयोग करते थे, जैसे मध्य सप्तक के मध्यम से तार सप्तक के मध्यम तक, साथ ही राग दरबारी में मध्य सप्तक के पंचम से तार सप्तक के पंचम तक मींड़ के विशेष प्रयोग में आप अत्यंत निपुण थे।

पन्नाबाबू जी ऊँचे स्वरों के प्रयोग तथा उपशास्त्रीय, सुगम एवं फिल्मी संगीत में छोटी बाँसुरी का प्रयोग करते थे, जिसे वे सदैव अपनी जेब में रखा करते थे। आपने शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, फिल्मी संगीत तथा लोक सगीत के साथ–साथ ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी, बाउल, भटियाली, कीर्तन, मांड आदि सभी को बाँसुरी पर प्रस्तुत किया। इस प्रकार आपने संगीत की सभी शैलियों एवं रंगों को बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया तथा बाँसुरी की वादन शैली को उच्चतम स्तर पर स्थापित किया।

पन्नाबाबू जी ने 6 तारों का तानपुरा निर्मित करने में भी अपना विशेष योगदान दिया। ऊँचे स्वर स्केल की तानपुरी भी भारतीय संगीत में पन्नाबाबू जी द्वारा ही प्रस्तावित की गई। सुरपेटी या श्रुति बॉक्स को प्रारम्भ में दक्षिण भारतीय (कर्नाटक) संगीत में प्रयुक्त किया जाता था, जिसे पन्नाबाबू जी के प्रस्ताव के बाद ही उत्तर भारतीय संगीत में भी प्रयुक्त किया जाना प्रारम्भ हुआ। 'डी शार्प' और 'ई'स्वर स्केल के लिए ऊँचे स्वर स्केल का तबला भी पन्नाबाबू जी का ही प्रस्ताव था, जिसके परिणाम स्वरूप समान स्वर स्केल में तबलावादन प्रारम्भ हुआ जो कि अत्यधिक कर्णप्रिय सिद्ध हुआ।

पंडित पन्नालाल घोष जी ने कई नवीन रागों का निर्माण किया तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत के साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपके द्वारा निर्मित नवीन राग हैं–राग दीपावली, चन्द्रमौली, जयन्त, कुमारी, नुपुरध्वनि, रत्नपुष्पिका, शुक्लपलासी तथा पंचवटी (राग माला)। इसके साथ–साथ आपने कई अप्रचलित, मिश्र एवं कर्नाटक राग जैसे हंसनारायणी, बसंतमुखारी, मियां की सारंग, शिवेन्द्रमध्यम, पुष्पचंद्रिका आदि को भी प्रचलित किया। इसके साथ–साथ आपने कई प्रचलित रागों में उच्च श्रेणी की विलंबित एवं द्रुत रचनाएं भी निर्मित की।

आपने कालिंगड़ा विजय, आन्दोलिका, ऋतुराज, हरियाली तथा ज्योर्तिमॉय अमितआभा जैसी श्रेष्ठ वाद्य वृन्द रचनाएं निर्मित की, साथ ही भारत के राष्ट्रीय गीत 'वन्देमातरम्' के प्रथम दो चरणों के लिये भी पन्नाबाबू जी ने संगीत रचना की, जिसे उन्होंने राग मियाँ मल्हार एवं तीनताल में निबद्ध किया था, जिसे सभी संगीतकारों द्वारा एवं देश के महान नेता जैसे जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल और भारत यात्रा के दौरान चीन के छाऊ–एन–लाई द्वारा अत्यंत सराहा गया।

भारतीय फिल्मी संगीत में भी आपका इतना प्रभावशाली योगदान रहा कि आन्दोलन, अंजान, बंसत–बहार, दुहाई, मुन्ना, मुग्ल–ए–आज़म, पुलिस, नन्दकिशोर, मीरा, सवाल, बीसवीं सदी एवं आधार जैसी प्रख्यात फिल्मों के साथ आपका नाम जुड़ा।

पंडित पन्नालाल घोष जी के आकाशवाणी द्वारा प्रसारित कार्यक्रम एवं संगीत सम्मेलनों में प्रस्तुतियों से आपने सम्पूर्ण भारत के साथ–साथ विदेश में भी अपनी संस्कृति की छाप छोड़ी। सन् 1936–37 में पन्नालाल घोष जी 'सराय कैला' की राजधानी के सुविख्यात 'छाऊ नृत्य' समूह के निर्देशक के रूप में यूरोप गए थे। आपने अपनी कला को आगे हस्तान्तरित कर 'गुरू–शिष्य परम्परा' का पूर्ण ज़िम्मेदारी से निर्वाह किया। आपने कई शिष्यों को उत्कृष्ट तालीम प्रदान कर उन्हें कुशल बाँसुरीवादक के रूप में स्थापित किया। उनमेंकुछ प्रमुख नाम हैं– श्री हरिपद चौधरी, पंडित देवेंद्र मुर्देश्वर, पंडित वी.जी.कारनाड, पंडित रासबिहारी देसाई, पंडित नित्यानंद हल्दीपुर, पंडित सूरजनारायण पुरोहित, उस्ताद अमीन–उर–रहमान (ढाका) आदि। इस प्रकार पंडित पन्नालाल घोष जी ने भिन्न–भिन्न माध्यमों द्वारा संगीत के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आप वास्तव में एक महान् कलाकार एवं व्यक्ति थे। आप अपने सद्भावी, सहज एवं सहयोगी व्यवहार के कारण कलाकार, आम जन एवं अपने परिवार में सदैव प्रिय रहे। आप सदैव धर्म एवं अध्यात्म के मार्ग पर प्रशस्त हुए।

20 अप्रैल, 1960 में दिल्ली में मात्र 48 वर्ष की अल्प आयु में पन्नाबाबू जी के आकस्मिक निधन से संपूर्ण संगीत जगत को बहुत बड़ा आघात लगा। यह घटना संगीत जगत के लिए अपूरणीय क्षति सिद्ध हुई। इस प्रकार अपने छोटे से जीवन काल में अर्जित असाधारण उपलब्धियों से आपकी सांगीतिक महानता एवं दुर्लभ प्रतिभा के दर्शन होते हैं।

निष्कर्ष

पंडित पन्नालाल घोष जी ने 48 वर्ष के अत्यधिक छोटे जीवन काल में बांसुरी के क्षेत्र में अपने अथक प्रयास एवं योगदानों द्वारा बांसुरी पर राग संगीत की स्थापना कर हिंदुस्तानी संगीत में अन्य पारंपरिक वाद्यों की तरह बांसुरी को एक स्वतंत्र एवं पूर्ण वाद्य के रूप में स्थापित किया। 32 इंच एवं 42 इंच (मंद्र बांसुरी), बांसुरी पर सातवें छिद्र की स्थापना, 6 तारों का तानपुरा, ऊंचे स्वर स्केल की तानपुरी, उत्तर भारत में सुरपेटी (श्रुति बॉक्स) का

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

प्रयोग, 'डी शार्प' और 'ई'स्वर स्केल का तबला, कई नवीन रागों का निर्माण आदि विशेष योगदानों द्वारा आपने भारतीय संगीत को और अधिक समृद्ध किया, जिससे संपूर्ण संगीत जगत एवं कलाकार वर्ग लाभान्वित हुआ। आपने भारतीय संगीत की इस अमूल्य विरासत का विभिन्न कार्यक्रमों, रिकार्ड्स एवं अपने शिष्यों द्वारा संपूर्ण भारत एवं विश्व में प्रचार–प्रसार किया, साथ ही संरक्षण भी किया। इस प्रकार, भारतीय संगीत में आपका योगदान तथा आपकी विलक्षण प्रतिभा एवं रचनात्मक विचारों के दर्शन होते हैं जो कि सभी संगीतिज्ञों के लिए प्रेरणादायी है।

सन्दर्भ

Kulkarni, Dr. Vishwas,“India’s Great Flute Maestro: Pandit Pannalal Ghosh”, available at: http://pannalalghosh.com/profile_pannalalghosh.html(accessed on 21/05/2011)

Mananjali,. (2012). Sangit Mahabharati, Mumbai (Maharashtra), Page No. 4.

Style, A Hallowed Heritage available at http://www.pannalalghosh.com/feature_style.html (accessed on 21/05/2011)

A stick full of music,(17 Sep.2011).TheTimes of India-The Crest Edition, Page no. 21

Flute Stop, (31 July, 2009). The Times of India-Mumbai Mirror, P. 44.

साक्षात्कार

घोष, पंडित नयन, मुंबई (महाराष्ट्र), 06.03.2012

कुलकर्णी, डॉ. विश्वास, मुंबई (महाराष्ट्र), 04.08.2012

भाटिया, तुषार, मुंबई (महाराष्ट्र), 15.03.2012